ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-I | ISSUE- VII | DEC. | 2014

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

फणीश्वरनाथ रेणु का मैला ऑचल: भारतीय ग्रामों की सच्ची जबान

प्रा.प्रकाश कांबले

हिंदी विभाग,

महावीर महाविद्यालय,

कोल्हापुर.,

प्रस्तावना :

उपन्यास जीवन के समानांतर चलनेवाश्ली गद्य विद्या है । अत:जीवन में आए परिवर्तनों का उपन्यास में प्रतिबिंबित होना आवश्यक है । स्वातंत्रोत्तर तथा प्रेमचंदोत्तर उपन्यास कई धाराओं तथा प्रवाहों मे बहता नजर आता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बादा का उपन्यास जहॉ एक ओर मनोविज्ञान, मार्क्सवाद तथा नगर के साथ जुडा था वहीं दूसरे ओर गॉव तथा कस्बों तक भी पहुॅचा था। दूसरे शब्दां मे—"एक और साहित्य अनुभव की प्रामाणिकता की आवाज उठा रहा था,वहीं दूसरी और स्वतंत्र भारत में उपक्षित और महत्वहीन माने जानेवाले गॉवो तथा अन्यान्य जंगलों की महत्ता का उदय हो रहा था । दोनों का उदय जिस साहित्य में हुआ—ऑचलिक कथा।"प्रस्तुत प्रपत्र का उद्देश रेणु के "मैला ऑचल"उपन्यास की भाषिक विशेषताओं का अध्ययन करना रहा है।

ऑचलिकता तथा ऑचलिक उपन्यास ::

अंवल शब्द का प्रयोग भारतीय साहित्य में बहुत पहले से होता आया है। संस्कृत की "अच्"धातु में "अलंच्" प्रत्यय लगने पर "अलंच्" शब्द निष्पन्न होता हळ। इसका सरल अर्थ है,"देश या प्रांत का एक भाग,क्षेत्र ।२ ऑचलकिता एक भाववाचक संज्ञा है। जैनेंद्रकुमार जैसे साहित्यकार ऑचलिकता को प्रवृत्ति विशेष मानकर इसके केंद्र में पात्र को नही बल्कि अंचल को रखते है।"

ऑचलिक उपन्यास:

"ऑचलिक उपन्यास उसे कहते हैं जो किसी ग्रामीण अॅचल,मैदानी,पहाडी या जंगली इलाके के लोगों के जीवन को उनसी स्थानीय विशिष्टताओं के साथ प्रस्तुत करता है। ऑचलिक उपन्यास में अंचली अपनी संपूर्ण विविधता और समग्रता के साथ नायक होता है। यह उपन्यास उन मूल्यों को मुखर करता है जो अंचल की जमीनकी विशिष्टता को लेकर भी मूलत:अपनी आंतरिक मानवीयता के कारण समस्त जीवन मूल्यों से जुड जाते है।"३ हिंदी साहित्यमें इस परंपरा की शुरूआत फणीश्वरनाथ रेणु के "मैला ऑचल"(१९५४)से मानी जाती है। डॉ.विश्वंभरनाथ उपाध्याय,अज्ञेय,डॉ.कांति वर्मा तथा डॉ.शिवप्रसाद सिंह आदि आलोचक हिंदी ऑचलिक उपन्यासों पर फ्रांसीसी,रूसी तथा अंग्रेजी उपन्यासों का प्रभाव स्वीकार करते है। रेणु की परंपरा को शैलेश मटियानी,उदयशंकर भट्ट,नागार्जुन,राजेंद्र अवस्थी,श्रीलाल शुक्ल,अमृतलाल नागर,रांगेश राघव,श्याम परमार,देवेंद्र सत्यार्थी,राही मासूम रजा,अभिमन्यु अनंत,हिमाशु जोशी आदि साहित्यकारों ने खूब समृध्द किया ।

ऑचलिक उपन्यासों का भाषा शिल्प :

ऑचलिक उपन्यास का नायक व्यक्ति न होकर स्वयं वह अंचल है। ऑचकिलक उपन्यासों की भाषा की विशेषताओं के बारे में डॉ.मृत्यूंजय उपाध्याय लिखते है कि,"उपन्यासकार को किसी विशेष अॅचल के जीवन को उसके परिवेश के साथ जिस माध्यम से प्रस्तुत करता है,वह भाषा—उस ऑचल में बोली जानेवाली बोली को लोकभाषा कहा जाता है। अत: अंचल का परिचय उसके निवासी,उसके पेड—पौधे,उसके जीव—जंतु,वहॉ का रहन—सहन, रीति—रिवाज,धार्मिक, सांप्रदायिक, राजनीतिक विश्वास आदि देंगे उतना ही परिचय वहॉ की भाषा भी देगी। अत: ऑचल विशेष की स्थानीय रंगत को उभारने के लिऐ ऑचलिक उपन्यासकार जिन लोकतत्वों का विपुलता के साथ प्रयोग करता है,उसमें लोकभाषा,बोलियों,उपबोलियों का महत्वपूर्ण स्थान होता है । लोक कहावते,लोकगीत,लोक मुहाबरें,लोक कथाऍ,लोक शब्द तथा परिनिष्ठित भाषा के लोकोच्यरित,बिगडे रूप आदि मिलकर इस लोकभाषा का निर्माण करते है।"४

ऑचलिक उपन्यासों मे स्थानीय बोली एवं भाषा का पूट मूलत: सर्जन की मॉग है,न की फैशन । सर्जन की मॉग दो तरह से—'एक तो स्थान विशेष का वातावरण चित्रित करने के लिए,दूसरे वहॉ के

जीवन को जिवंतता और उसकी मूलसहजता के साथ अंकित करने के लिए । भाषा उपर से ओढी हुई चीज न लगकर वह स्थान विशेष के लोगों के संस्कारों तथा अेनुभूती की अभिव्यक्ति होती है।'इसलिए यह कहा जाता है कि ऑचलिक उपन्यासकार उस ऑचल या क्षेत्र का निवासी हो तथा वह उस भाषा से भली भॉति परिचित हो।

'मैला ऑचल' में भाषा शिल्प :

फणीश्वरनाथ रेणु को हिंदी के सर्वप्रथम ऑचलिक उपन्यासकार का स्थान जिस उपन्यास ने प्राप्त किया,वह है 'मैला ऑचल'। भूमिका में ही रेणु जी स्पष्ट करते है कि "यह है मैला ऑचल:एक ऑचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया।....मैने इसके एक हिस्से के एक ही गॉव को—पिछडे गॉव का प्रतीक मानकर—इस उपन्यास—कथा का क्षेत्र बनाया।"५इसी आधार पर समीक्षकों ने इसे अॅचल या क्षेत्र जनजीवन का चित्रण रहन—सहन,रीति—रिवाज आदि का सम्यक वर्णन ही माना। लेकिन रेणु जी ऑचलिकता और मैला ऑचल की इस तरह की आलोचना से काफी दुखी थे। एक साक्षात्कार में उन्होंने स्वयं यह का कि,मुझसे बडी भूल हो गयी कि मैने मैला ऑचल की भूमिका में इसे एक ऑचलिक उपन्यास कह दिया। दरअसल रेणु की ऑचलिकता स्वाधीन आंदोलन की संतान लगती है। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान जिस समतामूलक,विकेंद्रित,समरस,समृद्ध भारत का सपना देखा गया था,रेणु अपनी तमाम रचनोओं में उसी को स्वाधीनता के बाद भी अभिव्यक्त कर रहे थे।"रेणु की ऑचलिकता लोक संस्कृति से अधिक एक आधुनिक बौद्धिक विचार हैं जिसमें सार्वभौम या विश्ववादी विचारधारोओं,व्यवस्थाओं के प्रभुत्व और नियंत्रण के समानांतर संभावनागर्भित स्थानियता को दृढता से खडा किया गया है। गांधीजी का अंतिम आदमी रेणु के चिंतन केंद्र में है और उसकी स्थिती में सुधारका प्रश्न उनके संपूर्ण रचनाकर्म का केंद्रीय प्रश्न है। रेणु इस पूरी समस्या को पिछडे अॅचल के संदर्भ में उठाते हैं। रेणु का मानना था कि पश्चिमी मॉडल की विकास नीति से पिछडे अॅचल के संदर्भ मे उठाते है। रेणु का मानना थि कि पश्चिमी मॉडल की विकास नीति से पिछडे इलाके और पिछले लोग और पिछडते चले जाएॅ और उनकी कीमत पर सत्ता और समृद्धि के कुछ केंद्र विकसित होते जाएॅगे। इस प्रकार रेणु की ऑचलिकता की अवधारणा एक राजनीतिक अवधारणा है जो स्वातंत्र्योतर भारत की विषम परिस्थितियों के भीतर पैदा हुई है।"६

उपर्युक्त सभी दृष्टिकोणों तथा विचारधाराओं को ध्यान मे रखकर मैला ऑचल की भाषिक तत्वों का अध्ययन करना उचित होगा। जहॉ तक ऑचलिक उपन्यासों में भाषा के दो रूप देखने को मिलते हैं,एक वह जो रचनाकार बोलता है और लिखता है,दूसरा वह जिसमें रचनाकार के पाश्त्र बोलते है। पात्र वाली भाषा भी लेखक की ही होती है,इसलिए लेखक को दोहरा रोख आ करना पडता है। रेणु जी अेपने पात्रों के मुख से पूर्णिया जिले की मैथिली भाषा का आग्रह करते है।

रेणु के उपन्यासों में भाषा का बेबूझ प्रयोग नही है। उनके पात्रा अपनी भाषा से अपना पूरा परिचय यदेते हैं। पात्रों का वैययक्तिक,बौद्रिधक और सामाजिक स्तर,सब एक साथ उनकी भाषा मे रूपायित है। गॉव का ज्योतिषी अस्पताल के खुलनेपर जिस प्रकार की भविष्यवाणी करता है उससे एक और उसके धंधे के चौपट होने का डर है वहीं दूसरी और लोगों मे डर पैदा करना भी हे—"हम कहते है कि एक दिन गॉव में गिद्रध —कौआ उडेगा। लक्षण अच्छे नहीं है। गॉव का ग्रह बिगडा हुआ है।.... ओह यह इसपितल?अभी तो नही मालूम होगा जब कुऍ मे दवा डालकर गॉव मे हैजा फैलाएगा। तो समझना। शिव हो!शिव हो।"७

रेणु जी का डॉ.प्रशांत यह पात्र मानवतावादी तथा पिछडे अंचल की दयनीय स्थिति को देखकर द्रवित हो उठता है। लेखख की मान्यता है कि मैले ऑचल की स्वच्छता जागृत संसार के संपर्क में आकर ही हो सकती है। इसलिए डॉ.प्रशांत तथा भगवानदास का चित्रण डॉ.प्रशांत जब कजेल से छुटकर आता है तब कमली उसके बच्चे की मॉ बन चुकी होती है। डॉ.प्रशांत उस स्वीकर कर ममता से कहता है—"मैं फिर काम शुरू करूॅगा यहीं,इसी गांव में। मै प्यार की खेती करना चाहता हूॅ। ऑसू से भीगी धरती पर प्यार के पौधे लहलाएंगे। मै साधना करूॅगा,ग्रामवासनी भारतमाता के मैले ऑचल तले! कम से कम एक ही गॉव के कुछ मुरझाए होंठो पर मुस्कुराहट लौटा सकूॅ,उनके ह्रदें आशा और विश्वास प्रतिष्ठित कर सकूॅ।"८ इसी उत्कट भावना के चरम बिंदू पर कृति का समाप्त करना लेखक के निर्धारित लक्ष्य तथाआदर्श को भी स्पष्ट कर देती है। डॉ.प्रशांत के मानवतावादी संवाद मूलत: रेणु की मानवतावादी दृष्टि है।

रेणु जी जातीय भावना को अपने पात्रों के व्दारा बडी कुशलता से भिन्न—भिन्न स्तरोंपर प्रकट की है जिससे जीवन में विष बेलि की भॉति व्याप्त जातिगत दूषण और उसके शोषक परिणामों को स्पष्ट रूप से दिखाया है। डॉ.प्रशांत शुद्रध मानवतावादी दृष्टि से सेवा करने हेतु मेरीगंज मे आए थे "लेकिन हर कोई सेवा

से पहले उनकी जाति जानना चाहता है क्यांकि उनकी दृष्टि से जाति चीज बहुत बडी है। जात–पात नही माननेवालों की भी जाति होती है। सिर्फ हिंदू कहने से ही पिंड छूट सकता। ब्राह्मण है?....कौण ब्रह्मण! गोत्रा क्याहै,मूल कौन है?....शहर में कोई किसी से जात नहीं पूछता। शहर की लोगों की जाति का क्या ठिकाना। लेकिन गॉव में तो बिना जाति के आपका पानी तक नही चलता।"

मैला ऑचल का मेरीगंज संक्रमणकालीन भारत का धीरे–धीरे जागृत होता हुआ ऑचल हैं। यह ऑचल पीढी–दर –पीढ़ी निष्प्राण परंपराओं,रूढियों तथा अंधविश्वासों को ढोता हुआ नजर आता है। विकसित समाज से अलग पडे हुए अंचल में जब मलेरिया सेंटर खुलता है तो ब्राह्मण टोलीवाले दिनरात डॉक्टर और अंग्रेजी दवा के खिलाफ तरह–तरह की कहानियॉ सुनाते फिरते हैं। जोतखी का यह विश्वास है कि डॉक्टर लोग ही रोग फैलाते है,सुई भोंककर देह में जहर दे देते है,आदमी हमेशा के लिए कमजोर हो जाता है,हैजा के समय कूपों में दवादेते है,गॉव का गॉव हैजा से समाप्त हो जाता है,इसके अलावा,बिलैती दवा में गाय का खूनमिलारहता है।"

डॉक्टर के प्रति गॉव के लोगों में स्त्रियों की दृष्टि से बडी संकुचित मानसिकता इसी कारण जोतखी को आश्चर्य होता है जब डॉक्टर उसे बेपर्द कर उसकी जॉच करना चाहता है। बूढा आप अपनी लडकी के इलाज के पैसे नही थे तब डॉक्टर से कहता है कि,'हुजूर,लडकी की जात बिना दवा दारू के ही आराम हो जाती है।'११

भाषा शिल्प :

डॉ.आदर्श सक्सेना के अनुसार "ऑचलिक उपन्यास में उपन्यासकार की भाषा तथा पात्रो के वार्तालाप की भाषा का प्रमुख अंतर मिट जाता है,जितना कम यह अंतर होता है,भाषाउतनी ही अधिक ऑचलिक उपन्यास के अनुकूल होती है।"१३ लेकिन कभी कबार यह प्रयोग कृति को दुरूह भी बना दे सकता है ओर परिणामस्वरूप उसके माधअयम से रसग्रहण में कठिनता का अनुभव हो सकता है। यह बात मैला ऑचल के बारे में सही है।

शब्दप्रयोग:

ग्रामीण या तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक नजर आता है। शब्दों के लोकोच्चारण का बहुल प्रयोग मैला ऑचल का वैशिष्टय भी और सीमा भी । क्योंकि इससे एक और ऑचलिक स्वरूप ग्रहण करने में बडी सहायता मिलती है और लोकोच्चरण के कारण कई बार इसके अंश पाठक तक सहजता के साथ संप्रेषित नही होते। जैसे –टीसन (स्टेशन),रमैन (रामायण),डिस्टी बोर(डिस्ट्रीक्ट बोर्ड),रैट(राइट),अन्डोलन (आंदोलन),गन्हीं(गांधी),भाखा (भाषा),डलेवर(ड्राइवर),छिमा(क्षमा) आदि– कतिपय ग्राम्य शब्दों का प्रयोग भी आंचलिकता को यग प्रदान करता है।

भाषा का लोक–प्रचलित रूप,मुहावरें और लोकाक्तियॉ :

लोकभाषा की सजीवता में लोकोक्तियों तथा मुहावरें,कहावतों का बडा ही योगदान होता है। यह लोकोक्तियॅ तथा मुहावरें,कहावते वहॉ की हवा,मिट्टी,इतिहास,भूगोल या कूल में संस्कृति का अभिन्न अंग होती है। मैला ऑचल में कई जगहों पर इनका प्रयोग नजर आता है,जैसे–दो भैस की लडाई में डूब के सर आफत, बम,पिस्तौल के आगे काली टोपी वालों की लाठी क्या करेगी?हाथी के आगे पिद्दी,झरका,बान मारना,बैल का दिन भर खेत चास करना,करेला चढा नीम पर,तुरताक करना,चालनी कहे सुई से कि तेरी पैदी में छेद,पंचों के उपर हवाइयॉ उडना,पलक मारते ही क्या से क्या हो गाय आदि। इन लोकोक्तियों के साथ व्यक्ति नामों पर भी ऑचलिक प्रभाव नजर आता है।

ध्वन्यात्मकता :

रेणु को ध्वनि पकडने की अद्भुत शक्ति प्राप्त थी। पशु–पक्षियों की बोलीयों,बाजों के स्वर आदि को जिस सटीकता के साथ उन्होंने अंकित किया है वह आश्चर्यजनक है। इसी शक्ति के परिणामस्वरूप उन्होंने अपने पात्रों के मुख से उच्चरित भाषा,विशेषकर शब्दोच्चारण को हू–ब–हू पकड लिया है। फलस्वरूप रेणु के पात्र कितने जिवंत है,यह इस क्षेत्र से परिचय रखनेवाला व्यक्ति जानता है।[४]

रेणु के भीतर का कलाकार इतना अधिक संवेदनशील है कि केवल बोलियों और लोकगीतों शब्दों से नही निरर्थक सी लगनेवाली वाद्य ध्वनियों और पशु–पक्षियों की बोलीयों से भी गहरे अर्थ व्यक्त करने की क्षमता उनकी भाषा में है,जैसे–कुत्तों का सामूहिक रूदन,फाटक खुलने की आवाज,ढोल की

आवाज,पक्षियों की चहचहाट,छींकना,रोना,तुतलान,ठहाके तक की ध्वनी को शब्दबद्ध किया है। गायों की आवाज,पेड पत्ततों के हिलने की ध्वनी,नाक सड़कने और छीकने की आवाजे,हॅसुलियों और झॉझने के बनजे,कंगनों की खनक तक मूर्त होती नजर आती है।

निष्कर्ष :

१. "मैला ऑचल" मे स्थानीय बोली एवं भाषा का पूट मूलत: सर्जन की मॉग है। सर्जन की मॉग दो तरह से—एक तो स्थान विशेष का वातावरण चित्रित करने के लिए,दूसरे वहॉ के जीवन को जीवंतता और उसके मूलसहजता के साथ अंकित करने के लिए।

२. रेणु की ऑचलिकता स्वाधीन भारत की संतान है। इसी कारण रेणु की भाषा संस्कृति से अधिक एक आधुनिक बौद्धिक विचार नजर आती है जिसमें सार्वभौम या विश्ववादी विचारधाराओं,व्यवस्थाओं के प्रभुत्व एव संभावनागर्भित स्थानीयता को दृढता से अभिव्यक्त करती है। साथ ही रेणुजी की भाषा स्वातंत्र्योतर भारत की गॉवो में आए सामाजिक,सांस्कृतिक या नागरी जीवन के संपर्क मे आए बदलावो की भाषा लगती है।

३. रेणु की भाषा में आए स्थानिय शब्द,गीत ,महावरें,कहावते कई जगहों पर अस्पष्टता तथा क्लिष्टता की अवधारणा करते है,वही दूसरी और अधिकांश स्थलों पर सौदर्य और आकर्षण भी निर्माण करते है। साथ ही भाषा के रूप परिवर्तन,ऑचलिक उक्तियों,लहजों और शब्द परिवर्तनों —प्रयोंगो से पाठको के ज्ञान को समृद्ध बनाया गया है।

४. 'मैला ऑचल' मे भाव प्रणव शैली का बडा सफल प्रयोग मिलता है। इसके साथ विवरणात्मक तथा इतिवृतात्मक शैली,संवादात्मक शैली,पत्र शैली तथा रिपोर्ट शैली का भी प्रयोग नजर आता है ।

५. रेणु के डॉ.प्रशांत तथा बावनदास के संवादों मे तथा कार्य मे दिखायी देनेवाली मानवीयता स्वयं लेकक का गॉवों की सुधार के प्रति दिखाई देनेवाली आधुनिक तथा सहानुभूति की दृष्टि है। लेखक इनके संवादों के माध्यम से हमे यह उपदेश देते है कि नागर जीवन के पात्रों के सहयोग से ग्रामीण जीवन मे सुदार एव परिवर्तन अपेक्षित है ।

अंतत: रेणु जी का 'मैला ऑचल' मेरीगंज इस एक गॉव की कथा नही,बल्कि स्वातंत्र्योतर भारत के पिछडे ग्राम का प्रतीक है। इस सदर्भ मे इसकी भाषा भी एक ऐसे ग्राम की अभिव्यक्ति है कि जसमे फूल भी है,शूल भी है,धूल भी है,गुलाल भी। कीचड भी है,चंदन भी। सुंदरता भी है,कुरूपता भी।

कुल मिलाकर पिछडे गॉव की सामाजिक,सांस्कृतिक,आर्थिक,कृषि आदि को रेणु जी 'वस्तु'बनाकर उसे अभिव्यक्त करते हैं।

संदर्भ सूची :

१. डॉ.मृत्युंजय उपाध्याय,हिंदी के ऑचलिक उपन्यास,भुमिका से,प्रथम संस्करण १९८९.

२. डॉ.हरदेव बाहरी,हिंदी शब्दकोश,पृ.०३,संस्करण २००६.

३. डॉ.रामदरश मिश्र, हिंदी के ऑचलिक उपन्यास (ऑचलिक उपन्यास),पृ.०९ प्रथम संस्करण १९८४

४. डॉ.मृत्युंजय उपाध्याय,हिंदी के ऑचलिक उपन्यास,पृ.१०२,प्रथम संस्करण १९८९.

५. फणीश्वरनाथ रेणु ,मैला ऑचल,भूमिका से,छठा संस्करण,१९९०.

6- डॉ.सुशील कुमार ,रेणु की रचनाऔं की विवेचना,biharnewes-com 3 May.2011.

७. फणीश्वरनाथ रेणु,मैला ऑचल,पृ.२८.

८. वही पृ.१६०.

९. वही पृ.१६०

१०.वही पृ.२८.

११.वही पृ.१४०

१२.वही पृ.२६

१३.देवेश ठाकूर ,मैला ऑचल की रचना प्रक्रिया,पृ.९० से उद्धृत.

१४.सं.डॉ.रामदरश मिश्र,हिंदी के ऑचलिक उपन्यास,पृ.१०१.